Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

निशा यादव* डॉ. कल्पना शर्मा **

*** शोधार्थी, शासकीय क.रा.क. महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत**
**** विभागध्यक्ष, जे.सी. मिल कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – महिला समाज का प्रतिबिंब है। समाज का स्वरूप और उसकी प्रगति महिलाओं की स्थिति, भूमिका तथा उसके योगदान से परिलक्षित होती है। देश, समाज व परिवार के निर्माण में उनका सक्रिय योगदान है। महिलाओं के बिना राष्ट्र निर्माण का सपना अकल्पनीय है। भारत वर्ष का इतिहास महिलाओं के बलिदान से रचा गया है। आदिकाल से समाज में महिलाओं की स्थिति में उतार चढ़ाव आते रहे हैं। फिर भी महिलाओं ने हमेशा परिवार व समाज का गौरव बढ़ाया है। प्रलय और निर्माण दोनों ही उसकी गोद में खेलते हैं। मनुस्मृति में लिखा है जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। महिलाओं को यह सममान उनके त्याग, बलिदान, संरक्षण, प्रबंधन व समायोजन के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। प्राचीन काल से समाज में महिलाओं को लक्ष्मी, सरस्वती व दुर्गा के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ है।

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति देखने से ज्ञात होता है कि उस समय महिलाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था थी जिसके संचालन का कार्य मुख्य रूप से महिलाओं की जिम्मेदारी थी। वैदिक युग के पश्चात् ईसापूर्व 600 से 300 ईसा पूर्व में महिलाओं के मान सम्मान में गिरावट देखने को मिलती है। 12वीं सदी से लेकर 1750 ई. तक विदेशी आक्रमण और राजनैतिक उथल पुथल के कारण महिलाओं की स्थिति में और भी गिरावट आई। इस काल में महिलाओं की आजादी छीनकर गृहस्थी को उनकी समस्त गतिविधियों का केन्द्र बना दिया। आधुनिक युग में महिलाएँ धीरे-धीरे महसूस करने लगी हैं कि इंसान के रूप में उनका निजी व्यक्तित्व है तथा उनके जीवन का लक्ष्य मात्र अच्छी पत्नी या समझदार माँ बन जाने से पूर्ण नहीं हो जाता है। बल्कि वे यह मानने लगी हैं कि वे भी नागरिक समुदाय और संगठित का सदस्य हैं। वर्तमान समय में महिलाओं के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन के कारण महिलाएँ चाहे उच्च वर्ग की हों, मध्यम वर्ग की अथवा निम्न वर्ग की उनके विचारों में क्रांतिकारी बदलाव आने के कारण महिलाएँ आर्थिक तौर पर स्वतंत्र व आत्मनिर्भर हो रही हैं। महिलाएँ घर के साथ-साथ घर के बाहर भी अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। आधुनिक युग में महिलाएँ चाहे घरेलू हों या कामकाजी दोनों ही अपने परिवार का समायोजन भलीभाँति करती हैं। वे अपने बालक बालिकाओं को विभिन्न परिवर्तित परिस्थितियों में समायोजन करना सिखाती हैं। घरेलू महिलाओं तथा कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में क्या अंतर है जानने की जिज्ञासा रही है। इसलिये मैंने शोध का विषय- 'घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' चुना है।

उद्देश्य– मैंने अपने शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं:

1. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. कामकामजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ – मैंने अपने शोध कार्य हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की हैं:

1. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि– शोध अध्ययन हेतु ग्वालियर शहर की घरेलू महिलाओं के 75 बालक 75 बालिकाएँ कुल 150 तथा कामकाजी महिलाओं के 75 बालक तथा 75 बालिकाएँ कुल 150 का चयन सविचार निदर्शन विधि से किया। इस प्रकार निदर्श का आकार 300 बालक बालिकाएँ हैं। तथ्यों के संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया है। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिये माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण का उपयोग किया है। परिकल्पनाओं के सत्यापन के उपरांत निष्कर्ष ज्ञात किये हैं।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं सारणीयन– संकलित तथ्यों को वर्गीकृत कर तालिका क्रमांक एक से छ: तक में प्रदर्शित किया है-

तालिका क्रमांक – 1: घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का स्तर

समायोजन	बालक		बालिकाएँ		योग	
स्तर	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
उच्च	16	10.66	32	21.33	48	32.00
मध्यम	21	14.00	22	14.66	43	28.00
निम्न	38	25.33	21	14.00	59	39.33
योग	75	50.0	75	50.00	150	100.0

तालिका क्रमांक – 1 में घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन स्तर के आंकड़े दर्शाये गये हैं। तालिका प्रदर्शित करती है कि 16(10.66%) बालक तथा 32(21.33%) बालिकाओं कुल 48(32.0%) का समायोजन स्तर उच्च पाया गया है। मध्यम समायोजन स्तर के कुल 43(28.0%) बालक एवं बालिकाएँ पाई गई हैं जिनमें 21(14.0%) बालक तथा 22(14.66%) बालिकाएँ हैं। निम्न समायोजन स्तर के 38(25.33%) बालक तथा 21(14.0%) बालिकाएँ कुल 59(39.33%) बालक बालिका पाये गये हैं।

सम्पूर्ण तालिका प्रदर्शित करती है कि उच्च स्तर के समायोजन में बालिकाओं की संख्या बालकों की तुलना में अधिक है तथा निम्न स्तर के समायोजन में बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अधिक है।

तालिका क्रमांक – 2: कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का स्तर

समायोजन स्तर	बालक		बालिकाएँ		योग	
	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
उच्च	18	12.00	45	30.00	63	42.00
मध्यम	22	14.66	19	12.66	41	27.33
निम्न	35	23.33	11	7.33	46	30.66
योग	75	50.0	75	50.00	150	100.0

तालिका क्रमांक – 2 में कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं का समायोजन स्तर प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि 18(12.0%) बालकों तथा 45(30.0%) बालिकाओं का समायोजन स्तर उच्च है। मध्यम स्तर के समायोजन करने वाले बालक 22(14.66%) तथा बालिकाएँ 19(12.66%) हैं जबकि 35(23.33%) बालक व 11(7.33%) बालिकाओं का समायोजन स्तर निम्न पाया गया है।

तालिका दर्शाती है कि 63(42.0%) बालक बालिकाओं का समायोजन स्तर उच्च, 41(27.33%) का मध्यम एवं 46(30.66%) का निम्न पाया गया है। कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं का समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर उच्च स्तर के समायोजन में बालिकाओं की संख्या बालकों की तुलना में अधिक पाई गई है जबकि निम्न स्तर के समायोजन में बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अधिक पाई गई है।

तालिका क्रमांक – 3: घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का स्तर

समायोजन का स्तर	घरेलू महिलाएँ		कामकाजी महिलाएँ		योग	
	सं.	प्र.	सं.	प्र.		
उच्च	48	15.99	63	21.00	111	37.00
मध्यम	43	14.33	41	13.66	84	28.00
निम्न	59	19.66	46	15.32	105	35.00
योग	150	50.0	150	50.0	300	100.0

तालिका क्रमांक – 3 में घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर के आंकड़े प्रदर्शित किये गये हैं। तालिका दर्शाती है कि घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं में उच्च स्तर के बालक बालिकाओं की संख्या 111(37.0%) मध्यम स्तर की 84 (28.0%) तथा निम्न स्तर की 105 (35.0%) पाई गई है। दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर उच्च स्तर के अंतर्गत कामकाजी महिलाओं के बालक बालिका 63 (21.0%) पाये गये है। जो कि 48 (15.99%) की तुलना में अधिक है। मध्यम एवं निम्न स्तर में घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाएँ क्रमश: 43 (14.33%) व 59(19.66%) पाई गई है। जो कि कामकाजी के बालक बालिकाओं की क्रमश: संख्या 41(13.66%) व 46(15.32%) की तुलना में अधिक है।

तालिका क्रमांक – 4:घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
बालक (N=75)	1.71	0.80	298	–3.30	p<0.05
बालिकाएँ (N=75)	2.15	0.83			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 4 में घरेलू महिलाओं के बालकएवं बालिकाओं के समायोजन स्तर के माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि बालकों के समायोजन स्तर का मध्यमान 1.71 है तथा बालिकाओं के समायोजन स्तर का मध्यमान 2.15 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 3.30 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। अत: मूल्य परिकल्पना– 'घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा' अस्वीकृत होती है। बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। बालिकाओं का समायोजन बालकों के समायोजन की तुलना में उच्च पाया गया क्योंकि बालिकाओं के समायोजन स्तर का मध्यमान बालकों के मध्यमान की तुलना में अत्यधिक है।

तालिका क्रमांक – 5: कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
बालक (N=75)	1.77	0.81	298	5.35	p<0.05
बालिकाएँ (N=75)	2.45	0.74			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक – 5 में कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन स्तर के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि बालकों के समायोजन स्तर का मध्यमान 1.77 है तथा बालिकाओं के समायोजन स्तर का माध्यम 2.45 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 5.35 है। जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना– 'कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा' अस्वीकृत होती है। बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। बालिकाओं का समायोजन बालकों के समायोजन की तुलना में उच्च पाया गया। क्योंकि बालिकाओं के समायोजन स्तर का मध्यमान बालकों के मध्यमान की तुलना में अत्यधिक है।

तालिका क्रमांक – 6: घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

महिलाएँ	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
घरेलू (N=150)	1.93	0.84	298	1.91	p<0.05
कामकाजी (N=150)	2.11	0.85			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक–6 में घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर का मध्यमान 1.93 है तथा कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर का माध्यम 2.11 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 1.91 है। जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना– 'घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा' अस्वीकृत होती है। घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में सार्थक का अंतर पाया गया। कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं का समायोजन घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन की तुलना में उच्च पाया गया क्योंकि कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समयोजन स्तर का मध्यमान घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर के मध्यमान के बालक की तुलना में अत्यधिक है।

परिणाम – शोध अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये हैं–

1. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में उच्च स्तर के समायोजन करने वाली बालिकाओं की संख्या अधिक पाई गई तथा निम्न स्तर के समायोजन करने वाले बालकों की संख्या अधिक पाई गई।
2. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में उच्च स्तर का समायोजन करने वाली बालिकाओं की संख्या अधिक पाई गई तथा निम्न स्तर का समायोजन करने वाले बालकों की संख्या अधिक पाई गई।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर की तुलना करने पर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं की सर्वाधिक संख्या उच्च स्तर के समायोजन करने वालों की पाई गई। घरेलू महिलाओं के बालकों की सर्वाधिक संख्या निम्न स्तर के समायोजन के अंतर्गत पाई गई।
4. घरेलू महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। बालिकाओं का समायोजन स्तर बालकों की तुलना में उच्च पाया गया।
5. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। बालिकाओं का समायोजन बालकों की तुलना में उच्च पाया गया।
6. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं का समायोजन घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में उच्च पाया गया।

निष्कर्ष– बालिकाओं का समायोजन बालकों की तुलना में उच्च स्तर का होता है तथा कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाएँ घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में उच्च स्तर का समायोजन करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. बर्मन, गायत्री 'किशोरावस्था' शिवा प्रकाशन, इन्दौर।
2. कुप्पूस्वामी, बी. 'बाल व्रूवहार और विकास' विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., कानपुर।
3. भटनागर, सुरेश 'बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान' इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
4. सलूजा तथा सलूजा 'कामाकजी महिलाएँ' पुस्तक महल, दिल्ली।
5. वर्मा प्रीति तथा श्रीवास्तव डी.एन. 'बाल मनोविज्ञान बाल विकास' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

****